# भट्टारक सकलकीर्ति

**जीवन-परिचय :** जैन भट्टारक परम्परा में 'भट्टारक सकलकीर्ति' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह एक ऐसे सन्त हैं, जिनकी रचनाएँ राजस्थान के शास्त्र-भंडारों का गौरव बढ़ा रही है।

भट्टारक सकलकीर्ति का जन्म सवंत् 1443 (सन् 1386) में हुआ था। ये 'अणहिलपुर पट्टण' के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम कर्मसिंह हूमड़ एवं माता का नाम शोभा था। इनकी माता ने इनके गर्भधारण के समय एक सुन्दर स्वप्न देखा था और फल के अनुसार योग्य, कर्मठ और यशस्वी पुत्र की प्राप्ति होगी, ऐसा बतलाया गया था। इनका नाम 'पूनसिंह अथवा पूर्णसिंह' रखा गया।

कुशाग्र बुद्धि होने से पाँच वर्ष के होने पर ही इन्होंने सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया था। जीवन के प्रति विरक्ति देखकर माता-पिता ने 14 वर्ष की अवस्था में ही इनका विवाह कर दिया था, लेकिन इन्होंने गृहस्थ जीवन को त्याग कर मात्र 18 वर्ष की आयु में ही साधु जीवन अपना लिया। आठ वर्षों तक इन्होंने आचार्य पद्मनन्दि जी से प्राकृत, व्याकरण, काव्य, न्याय एवं संस्कृत ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया। बहुत समय तक ये भट्टारक रहे, 34 वर्ष में आचार्य की पदवी ग्रहण की, तब इनका नाम सकलकीर्ति रखा गया।

आचार्य सकलकीर्ति का स्थितिकाल विक्रम संवत् 1443-1499 तक है। एक पट्टावली के अनुसार भट्टारक सकलकीर्ति 56 वर्ष तक जीवित रहे हैं। संवत् 1499 में महसाना नगर में इनकी समाधि हुई।

सकलकीर्ति ने मुख्य रूप से राजस्थान एवं गुजरात प्रान्त के समीपस्थ प्रदेशों में विहार कर नवमन्दिर निर्माण, सिद्ध क्षेत्रों के लिए यात्रा संघों का नेतृत्व, प्रतिष्ठाएँ आदि करवायीं। संवत् 1490 से 1496 तक आपके द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्तियाँ जैन मन्दिरों में मिलती हैं।

भट्टारक सकलकीर्ति असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। प्राकृत एवं संस्कृत

भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार था।

**रचना-परिचय :** भट्टारक सकलकीर्ति ने साधु जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करते हुए लगभग 44 ग्रन्थों की रचना की है। इनके मुख से जो वाक्य निकलता था, वही काव्य रूप में परिवर्तित हो जाता था। आपके द्वारा लिखित रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

संस्कृत भाषा में लिखित रचनाएँ हैं—

1. शान्तिनाथचरित
2. वर्द्धमानचरित
3. मल्लिनाथचरित
4. यशोधरचरित
5. धन्यकुमारचरित
6. सुकमालचरित
7. सुदर्शनचरित
8. जम्बूस्वामीचरित
9. श्रीपालचरित
10. मूलाचारप्रदीप
11. प्रश्नोत्तरोपासकाचार
12. आदिपुराण
13. उत्तरपुराण
14. सद्भाषितावली-सूक्तिमुक्तावली
15. पार्श्वनाथपुराण
16. सिद्धान्तसारदीपक
17. व्रतकथाकोश
18. पुराणसारसंग्रह
19. कर्मविपाक
20. तत्त्वार्थसारदीपक
21. परमात्मराजस्तोत्र
22. आगमसार
23. सारचतुर्विंशतिका
24. पञ्चपरमेष्ठीपूजा
25. अष्टाह्निकापूजा
26. सोलहकारणपूजा
27. द्वादशानुप्रेक्षा
28. गणधरवलयपूजा
29. समाधिमरणोत्साहदीपक

हिन्दी (राजस्थानी) भाषा में लिखित रचनाएँ—

1. आराधनाप्रतिबोधसार
2. नेमीश्वर-गीत
3. मुक्तावली-गीत
4. णमोकार-गीत
5. पार्श्वनाथाष्टक
6. सोलहकारणरासो
7. शिखामणिरास
8. रत्नत्रयरास